॥ श्रीः ॥

लग्नवाराही

'तत्त्वप्रकाशिका' हिन्दीटीका सहिता

पुरुषकुण्डल्याम्

प्रथमभावफलम्—

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम् ।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोगं
जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः ॥ १ ॥

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री ।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सदा दिशतु नो मनसेप्सितं यत् ॥१॥

प्रणम्य पितरौ देवौ गुरून् मयिदयापरान् ।
कुर्वेऽहं लग्नवाराह्याष्टीकां तत्त्वप्रकाशिकाम् ॥ २ ॥
टीका यद्यपि ग्रन्थेऽत्र भूरिशो विवुधोदिताः ।
रच्यते सरलार्थाय कमलाकान्तशर्मणा ॥ ३ ॥
भाषाज्ञानपटीयांसस्साधारणजना अपि ।
टीकायार्थान् प्रगच्छेयुः प्रयासस्सफलो मम ॥ ४ ॥

जन्मलग्न में सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मङ्गल हो तो रक्तविकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दुःख और बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं ॥ १ ॥

द्वितीयभावफलम्—

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चन्द्रो बुधः सुरगुरुभृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः ॥ २ ॥

सूर्य, शनि और मङ्गल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान में हों तो अनेक प्रकार के दुःख तथा धन का नाश करते हैं तथा चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र दूसरे भाव में हों तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं ॥ २ ॥

तृतीयभावफलम्—

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ।
सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये ॥ ३ ॥

जन्मलग्न से तीसरे भाव में सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चन्द्रमा हो तो यशस्वी होता है और मंगल कोषाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एवं शनि यदि लग्न से तीसरे भाव में हों तो अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियों का प्रिय होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावफलम्—

आदित्यभौमतनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे ।
सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम् ॥ ४ ॥

जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों तो सुखरहित शरीर-वाला तथा निष्फल जन्मवाला होता है और चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ तथा धन की वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावफलम्—

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्तर्ति च विधुजः कुसुतं कुजार्कौ ।
शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम् ॥ ५ ॥

जिसके लग्न से पञ्चम स्थान में सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है, मंगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाववाला पुत्र होता है, शुक्र, चन्द्रमा और बृहस्पति हो तो सुन्दर एवं बुद्धिमान बहुत से पुत्र होते हैं ॥ ५ ॥

षष्ठभावफलम्—

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम् ।
शुक्रो बुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चन्द्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम् ॥ ६ ॥

जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में सूर्य और मंगल हों तो शत्रुपक्ष का नाश, शनि हो तो राजमान्य और षष्ठ भाव में शुक्र, बुध हों तो दुष्ट बुद्धिवाला होता है तथा बृहस्पति हो तो रोगी और चन्द्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव सदा ही वह विकल रहता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावफलम्—

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च ।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम् ॥ ७ ॥

यदि जन्मलग्न से सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हों तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोडी सन्तानवाली होती है, और बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र, बुध, सातवें भाव में हों तो उसकी स्त्री बहुत सन्तानवाली तथा अत्यन्त सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है ॥ ७ ॥

अष्टमभावफलम्—

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम् ।

शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
बुद्धया विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ॥ ८ ॥

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्मलग्न से आठवें भाव में हों तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अङ्ग में शस्त्राभिघात होता है और बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है ॥ ८ ॥

नवमभावफलम्—

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम् ।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानाधिषणं कुरुते मनुष्यम् ॥ ९ ॥

रवि, शनि और मंगल जन्मलग्न से नवम स्थान में हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पत्ति करते हैं, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति यदि नवम स्थान में हों तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप से धर्मकार्य में रहती है ॥ ९ ॥

दशमभावफलम्

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम् ।
चन्द्रश्च कीर्त्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च ॥ १० ॥

सूर्य, मङ्गल और शनि, यदि दशवें भाव में हों तो मनुष्य कुत्सित कर्म करनेवाला तथा दरिद्र होता है, चन्द्रमा हो तो कीर्तिशाली, शुक्र हो तो बहुत पुत्रवाला तथा बुध और बृहस्पति हों तो अच्छे कार्यों में निरत रहता है ॥ १० ॥

एकादशभावफलम्—

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीः ॥

सौम्यो विवेकसहितं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति सधनं रविजः सुकान्तिम् ॥ ११ ॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चन्द्र हो तो बहुत धन; मङ्गल हो तो स्त्रीसुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य; शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते हैं ॥ ११ ॥

द्वादशभावफलम्—

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
काणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम् ।
चन्द्रात्मजः प्रकुरुते निधनं धनानां
जीवः कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम् ॥ १२ ॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चन्द्रमा हो तो काना तथा मङ्गल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, गुरु हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्ययभाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है ॥ १२ ॥

स्त्रीकुण्डल्याम्

प्रथमभावफलम्—

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम् ।
शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीशः ॥ १ ॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न में सूर्य या मङ्गल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा, शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध, बृहस्पति में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली, पतिव्रता तथा चन्द्रमा हो तो दीर्घायु होती है ॥ १ ॥

द्वितीयभावफलम्—

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः
दारिद्र्यदुःखमतुलं निहिताः द्वितीये ।

वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ २ ॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मङ्गल हों तो वह स्त्री दुःख-दारिद्रय से युक्त और गुरु, शुक्र, बुध हों तो धनवती तथा भाग्यवती और चन्द्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है ॥२॥

तृतीयभावफलम्—

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधास्तृतीये
कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च ।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः ॥ ३ ॥

जिस स्त्री के तृतीय भाव में शुक्र, चन्द्रमा, भौम, गुरु, सूर्य, बुध—इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रों से युक्त तथा धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न से तृतीय भाव में शनि हो तो वह अतिधनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावफलम्—

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे
सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः ।
राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं
दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम् ॥ ४ ॥

जिस स्त्री के मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हों तो वह अल्प दुग्ध देने-वाली, चन्द्रमा हों तो सौभाग्य-शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन-भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावफलम्—

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च ।

राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं
कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशाङ्कः ॥ ५ ॥

स्त्री के पञ्चम भाव में सूर्य अथवा मङ्गल हो तो उसकी सन्तति मर जाती है, यदि बुध, गुरु, शुक्र हों तो पुत्र-पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव में राहु से मरण, शनि से रोग तथा चन्द्रमा से बहुत कन्यायें होती हैं ॥ ५ ॥

षष्ठभावफलम्—

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवाः
भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च ।
चन्द्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां वा ॥ ६ ॥

स्त्री के षष्ठ भाव में शनि, बुध, सूर्य, राहु, बृहस्पति और मङ्गल—इन ग्रहों में से कोई हो तो सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चन्द्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है ॥ ६ ॥

सप्तमभावफलम्—

सूर्यः क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्राः
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः ।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधिं विदेशगमनं च यथाक्रमेण ॥ ७ ॥

स्त्री के जन्मलग्न से सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि, चन्द्रमा, शुक्र हों तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धननाश, रोग, विदेश-गमन—ये फल देते हैं ॥ ७ ॥

अष्टमभावफलम्—

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोगं
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहुः ।

सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च ॥ ८ ॥

स्त्री के जन्मलग्न से अष्टम स्थान में गुरु और बुध हों तो पति से वियोग, चन्द्रमा, शुक्र और राहु हों तो मरण, सूर्य हों तो वैधव्य, मंगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो बहुत सन्तानवाली तथा पतिप्रिया होती है ॥ ८ ॥

नवमभावफलम्—

चन्द्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या
धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम् ।
भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ ९ ॥

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, गुरु—इनमें से कोई हो तो वह धर्म में निष्ठा रखने वाली; भौम के रहने से रोगी तथा शनि से विधवा और चन्द्रमा से बहुत सन्तान वाली होती है ॥ ९ ॥

दशमभावफलम्—

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्
पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च ।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः
शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः ॥ १० ॥

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा, सूर्य, शनि हो तो पाप-कर्म करने वाली तथा मङ्गल हो तो अल्पायु, चन्द्रमा हो तो धनरहिता तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्मलग्न से दशम भाव में हों तो धनवती तथा सौभाग्यवती होती है ॥ १० ॥

एकादशभावफलम्—

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां
पुत्रीमतीं च महिजोऽर्थवतीं हि चन्द्रः ।

आयुष्मतीं सुरगुरुश्च तथैव सौम्यो
राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम् ॥ ११ ॥

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्रों वाली, मङ्गल हो तो कन्याओं वाली, चन्द्रमा हो तो धन वाली होती हैं। ग्यारहवें भाव में बृहस्पति अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शुक्र हो तो धनवती होती है ॥ ११ ॥

द्वादशभावफलम्—

अन्ते गुरुर्हि विधवां दिनकृद् दरिद्रां
चन्द्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः।
साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां
प्राणेशसक्तहृदयां सुहृदां कुजश्च ॥ १२ ॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न से द्वादश स्थान में गुरु हों तो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्रा, चन्द्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हों तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र-पौत्रों से युक्त, पति में प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है ॥ १२ ॥

अन्ययोगाः

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत् ॥ १ ॥

लग्न में शनि और चन्द्रमा हों, त्रिकोण अर्थात् नवम-पञ्चम में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग होता है ॥ १ ॥

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।
तस्य भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः ॥ २ ॥

यदि अपने राशि का होकर सूर्य नवम भाव में हो तो उसका भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है ॥ २ ॥

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।
भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥ ३ ॥

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हों और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हों तो क्षण ही में उसका धन बृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च ।
सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः ॥ ४ ॥

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भावों में पापग्रह हों और दूसरे भावों में शुभ ग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है ॥ ४ ॥

षष्ठे च भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः ।
अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति ॥ ५ ॥

जिसके षष्ठ भाव में चन्द्रमा, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो उसकी स्त्री नहीं जीती है ॥ ५ ॥

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चन्द्रमाः ।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ ६ ॥

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चन्द्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीता है ॥ ६ ॥

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रोऽथ वा शशी ।
सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ७ ॥

जिसके दशम भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र वा चन्द्रमा हो उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा वह राजमान्य होता है ॥ ७ ॥

कुम्भे शौरिर्धने सूर्यो मेषे भवति चन्द्रमाः ।
मकरे च यदा शुक्रः स भुङ्क्ते पैतृकं धनम् ॥ ८ ॥

कुम्भ में शनि, धन भाव में सूर्य, मेष में चन्द्रमा और मकर में शुक्र हो तो पिता के धन का भोग करने वाला होता है ॥ ८ ॥

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥ ९ ॥

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव में मङ्गल न हो तो वह मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है ॥ ९ ॥

त्रिभिः स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुच्चगतैर्नृपः ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्निरर्थकः ॥ १० ॥

जन्म समय में ३ ग्रह स्वराशि के हों तो मन्त्री, ३ ग्रह उच्च के हों तो राजा, ३ ग्रह नीच के हों तो दास और ३ ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है ॥ १० ॥

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपकः ॥ ११ ॥

जिसके लग्न में शुक्र-बुध और केन्द्रस्थान में बृहस्पति, दशम भाव में मंगल हो तो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है ॥ ११ ॥

आदौ जीवः सितः प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम् ।
राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धनः ॥ १२ ॥

लग्न में गुरु, द्वादश में शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढ़ाने वाला होता है ॥ १२ ॥

क्रूराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च ।
दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयंकरः ॥ १३ ॥

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव में पापग्रह हों तो दरिद्रयोग होता है । इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है ॥१३॥

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत् ।
राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति ॥ १४ ॥

लग्न में गुरु, धनभाव में शनि तथा तीसरे स्थान में राहु हों तो उसकी माता शीघ्र ही मर जाती है ॥ १४ ॥

सप्तमे भवने चन्द्रो रवी राहुश्च मङ्गलः ।
सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः ॥ १५ ॥

जन्मलग्न से सप्तम भाव में चन्द्रमा, सूर्य, राहु और मंगल हों तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में अवश्य ही मर जाता है ॥ १५ ॥

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः ।

तीव्रपीडा भवेत्तस्य स्वस्थाने नैव तिष्ठति ।। १६ ।।

जन्मकाल में उच्च राशि का मंगल, सूर्य और राहु के साथ हो तो शरीर में बड़ी पीड़ा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है ।। १६ ।।

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते ।
सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति ।। १७ ।।

यदि रवि, राहु, मंगल और बृहस्पति क्रूर गृह (६।८।१२) में हो और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है ।। १७ ।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधशौरी तथैव च ।
यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे ।। १८ ।।

यदि गुरु, बुध, शनि, अपने गृह में हों तो जातक दीर्घायु और पद-पद में धन-सम्पत्ति देने वाला होता है ।। १८ ।।

अथ प्रश्न विचारः

कार्याकार्यप्रश्नः—

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के प्रश्नलक्षणम् ।। १ ।।
पञ्चैके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम् ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ च न सिद्धिदौ ।। २ ।।

प्रश्नकर्ता जिस दिशा में मुख करके प्रश्न पूछे—पूर्वादि क्रम से उस दिशा की संख्या, जिस प्रहर में पूछे उस प्रहर की संख्या, जिस नक्षत्र में पूछे उस नक्षत्र की संख्या, अश्विन्यादि से लेकर और दिन की संख्या (रविवार से गिनकर) उन चारों संख्याओं को जोड़ कर आठ से भाग देवे। यदि ५।१ शेष बचे तो शीघ्र, ४।६ बचे तो ३ दिन में, ३।७ बचे तो विलम्ब से, २।८ बचे तो कदापि कार्य की सिद्धि नहीं होती है ।। १-२ ।।

नष्ट-वस्तु-ज्ञान-प्रश्नः—

तिथिर्वारं च नक्षत्रं लग्नं वह्निविमिश्रितम् ।
पञ्चभिस्तु हरेद्भागं शेषं तत्त्वं विनिर्दिशेत् ।। ३ ।।

पृथिव्यान्तु स्थिरं ज्ञेयं चाप्सु व्योम्नि न लभ्यते ।
तेजस्तु राजसं ज्ञेयं वायोः शोकं विनिर्दिशेत् ॥ ४ ॥

शुक्लादि से तिथि संख्या, सूर्यादि वार संख्या, अश्विन्यादि नक्षत्र संख्या, प्रश्न लग्न की राशि संख्या——इन सबों के योग में ३ और मिलाकर उसमें ५ का भाग देने से एकादि शेष बचने से पृथिव्यादि पाँचों तत्त्व होते हैं। ३ शेष से पृथ्वी तत्त्व, इसमें गई वस्तु भूमि में रखी गई है, मिलेगी। २ शेष से जल तत्त्व, इसमें गई वस्तु जल में रखी गई है, नहीं मिलेगी। ३ शेष से आकाश तत्त्व, इसमें गई वस्तु आकाश में रखी गई है, नहीं मिलेगी। ४ शेष से अग्नि तत्त्व, इसमें गई वस्तु अग्नि स्थान में रखी गई है, राजा को मिलेगी। ५ शेष से वायु तत्त्व, इसमें गई वस्तु नहीं मिलेगी और शोक भी होगा ॥ ३-४ ॥

गर्भिणीप्रश्नः——

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमास्तृतीयसप्ते नवपञ्चमे च ।
गर्भे पुमान् स्यादृषिभिः प्रगीतश्चान्यग्रहे स्त्री विबुधैः प्रगीता ॥

प्रश्न लग्न में ३।७।९।५ स्थान में सूर्य, गुरु, मंगल हों तो गर्भ में पुत्र और शेष ग्रह इन स्थानों में हों तो गर्भ में कन्या होती है ॥ ५ ॥

तिथिर्वारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहर एव च ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत् ॥ ६ ॥
हयाग्नौ देवताबाधा पैत्री वै नेत्रदन्तिषु ।
षटचतुर्षु भूतबाधा न बाधा चैकपञ्चके ॥ ७ ॥

तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, प्रहर, इन सबों को जोड़ कर आठ का भाग दे। यदि ७।३ शेष बचे तो देवता सम्बन्धी बाधा, २।८ बचे तो पितरकृत बाधा, ६।४ बचे तो भूतबाधा और १।५ बचे तो कार्य निर्विघ्न पूरा होता है ॥ ६-७ ॥

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः